अपने प्यारे नन्हें दोस्त को बचाएं

गौरैया

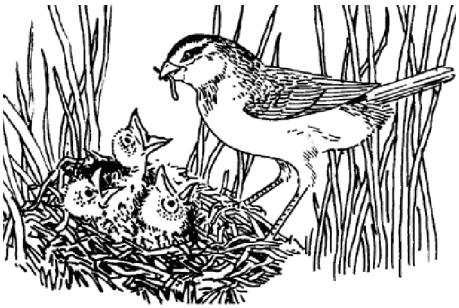

नर गौरैया को 'चिड़ा' और मादा को 'चिड़ी या चिड़ीया' भी कहते हैं। यह एक छोटी चिड़ीया है। यह हल्के और भूरे रंग में होती है। शरीर पर छोटे–छोटे पंख काले और हल्के पीले होते हैं। 14–16 सेंटीमीटर लंबी यह चिड़ीया मनुष्य के बनाए हुए घरों के आसपास रहना पसंद करती है। इसके पंखों का फैलाव 19–25 सेमी. होता है। गौरैया का वजन 26–32 ग्राम होता है। नर गौरैया का सिर, गाल और अंदर का भाग धूसर होता है तथा सीने के ऊपर, गला, चोंच एवं आंखों के बीच का भाग काला होता है। गर्मी में गौरैया के चोंच का रंग नीला–काला और पैर का रंग भूरा हो जाता है। सर्दी में इसके चोंच का रंग पील–भूरा हो जाता है। यह सभी तरह की जलवायु में रहना पसंद करती है। शहरों कस्बों और गांवों के आसपास यह बहुतायत में पाई जाती है।

गौरैया के घोसले घास के तिनकों, रेशों, कपड़े के बारीक टुकड़ों से बने होते हैं। इनके अंडे अलग–अलग आकार और पहचान के होते हैं। अंडे को मादा गौरैया सेती है। गौरैया के अंडा सेने की अवधि 10–12 दिनों की होती है, जो सभी चिड़ीयों के अंडे सेने की अवधि में सबसे कम होती है। एक प्रजनन अवधि में इसके कम से कम तीन बच्चे होते हैं।

गौरैया बहुत ही सामाजिक पक्षी है और ज्यादातर पूरे वर्ष झुंड में उड़ती है। एक झुंड डेढ़–दो मील की दूरी तय करता है। भोजन की तलाश में 2–5 मील भी यह उड़ लेती हैं। गौरैया का प्रमुख आहार अनाज के दाने, जमीन में बिखरे दाने तथा कीड़े–मकोड़े हैं। इसकी कीड़े खाने के आदत के चलते इसे किसानों का मित्र माना जाता है। गौरैया घरों से बाहर फेंके गए कूड़े–करकट में भी अपना आहार ढूंढ़ लेती हैं। फसल कटने के बाद खेतों में बिखरे दाने ढूंढ़ लेती हैं।

घरेलू गौरैया (पासर डोमेस्टिकस) यूरोप और एशिया में सामान्यतः हर जगह पाई जाती है। इसके अतिरिक्त पूरे विश्व में जहां–जहां मनुष्य गया इसने उनका अनुकरण किया और अमेरिका के अधिकतर स्थानों, अफ्रीका के कुछ स्थानों, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया तथा अन्य नगरीय बस्तियों में अपना घर बनाया। शहरी इलाकों में गौरैया के छह तरह की प्रजातियां पाई जाती हैं। ये हैं हाउस स्पैरो, स्पेनिश स्पैरो, सिंड स्पैरो, रसेट स्पैरो, डेड सी स्पैरो और ट्री स्पैरो। इनमें हाउस स्पैरो को गौरैया कहा जाता है।

वैसे तो भारत के लगभग सभी हिन्दी भाषी क्षेत्रों में यह गौरैया के नाम से लोकप्रिय है। तमिलनाडु तथा केरल में कूरूवी, तेलुगू में पिच्चूका, कन्नड़ में गुब्बाच्ची, गुजरात में चकली, मराठी में चिमानी, पंजाब में चिड़ी, जम्मू तथा कश्मीर में चेर, पश्चिम बंगाल में चराई पाखी, उड़ीसा में घरचटिया, उर्दू में चिड़ीया तथा सिंधी में इसे झिरकी कहा जाता है।

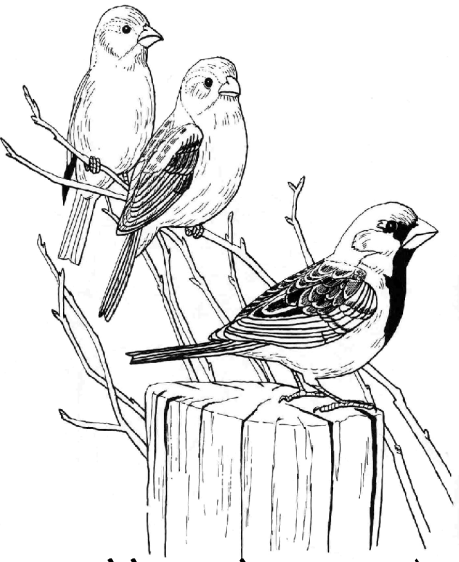

गौरैया को प्यार करें

एक समय था जब भोर होते ही गौरैयों के चहक के साथ शहरों और गांवों में दिन की शुरुआत होती थी। पर्यावरण को होने वाली मानवजन्य क्षति की एक मिशाल बनने जा रही है यह नन्ही सी चिड़ीया।

मानव के साथ रहने की भारी कीमत इस नन्ही–सी जान को चुकानी पड़ी है। गौरैया के संख्या में आकस्मिक कमी के कई कारण हैं। सबसे चौकाने वाला कारण है सीसारहित पेट्रोल का उपयोग। सीसारहित पेट्रोल के जलने पर मिथाइल नाइट्रेट नामक यौगिक है। यह यौगिक छोटे कीड़े–मकोड़ों के के शरीर में प्रवेश कर जाता है। छोटे कीड़े–मकोड़े ही गौरैया के मुख्य भोजन हैं जिनसे वह जहर गौरैया में प्रवेश कर जाता है और गौरैया मारी जाती है।

पहले घरों में ऐसे बहुत सारे स्थान होते थे जहां गौरैया या गौरैया जैसे पंछी अपने घोसले बनाते थे। खेत–खलिहान, बाग–बगीचे खत्म हुए तो पेड़ भी खत्म हुए। ऐसे में गौरैया अपने घर से बेघर हो गईं उसका दाना–पानी छिन गया।

किसानों द्वारा छोटे कीड़ों–मकोड़ों को मारने के लिए कीटनाशक का इस्तेमाल किया जाता है। रसायनों के इस्तेमाल से कीड़े–मकोड़े मारे जाते हैं। मरे हुए ये कीड़े–मकोड़े जहरीले हो चुके होते हैं। जिनको गौरैया खाती है और मारी जाती है।

केरल में कोलम के एसएन कॉलेज में जूलॉजी के प्रोफेसर डॉक्टर सैनुद्दीन पट्टाझी की सबसे चौंकाने वाली खोज यह है कि इमारतों की छतों पर मोबाइल फोन कंपनियों के बढ़ते हुए एंटेना और ट्रांसमीटर टावर गौरैया चिड़ियों की घटती हुई संख्या का आजकल मुख्य कारण बनते जा रहे हैं. उनका कहना है 'एक घोंसले में एक से आठ तक अंडे हो सकते हैं. उन्हें सेने में लिए आम तौर पर 10 से 14 दिन लगते हैं. लेकिन जो अंडे किसी मोबाइल फोन टॉवर के पास के किसी घोंसले में होते हैं, वे 30 दिन बाद भी पक नहीं पाते।'

आइए! इंसान के सबसे प्यारी दोस्त गौरैया को बचाने की शुरुआत करें। घर की छत, मुंडेर, बालकनी पर मिट्टी के बर्तनों में पानी, धान और चावल के दाने रखने की शुरुआत करें और बिखेरते रहें। आप पाएंगे की रोज सुबह आपके घर उनका आना शुरू हो जाएगा। आपके लगाव को गौरैया बड़ी जल्दी पहचान लेती हैं।

बालकनी या घर की छत पर एक बर्ड हाउस (घोसला) बनाकर रखें। वहां थोड़ा दाना–पानी का इंतजाम करें आप देखेंगे कि कुछ दिनों में ही गौरैया का बसेरा जरूर बसा होगा। हम चाहें तो गौरैया जैसी प्यारी चिड़ीया को आसानी से बचा सकते हैं।

ओ गौरैया.....

नहीं सुनी चहचहाहट तुम्हारी
इक अरसे से
ताक रहे ये नैन झरोखे
कुछ सूने और कुछ तरसे से।
फुदक फुदक के तुम्हारा
हौले से खिड़की पर आना,
जीवन का स्वर हर क्षण में
घोल निडर नभ में उड़ जाना।
धागे तिनके और फुनगियां
सपनों सी चुन चुन कर लाती,
उछलकूद कर इस धरती पर
अपना भी थी हक जतलाती।

खो गई तुम कहीं गौरेया
भौतिकता के अंध–जाल में
मानव के विकट स्वार्थ और

अतिवाद के मुख कराल में।
सिमट गई चिर्र–मिर्र तुम्हारी
मोबाइल के रिंग–टोन पर,
हँसता है अस्तित्व तुम्हारा
सभ्यता के निर्जीव मौन पर।

मोर–गिलहरी जो आंगन को
हरषाते थे सांझ–सकारे,
कंक्रीट के जंगल में हो गए
विलीन सभी अवशेष तुम्हारे।
तुलसी के चौरे से आंगन
हरा–भरा जो रहता था,
कुदरत के आंचल में मानव
हँसता भी था और रोता था।
भूल गये हम इस धरती पर
औरों का भी हक था बनता,
मानव बन पशु निर्दयी
मूक जीवों को क्यों हनता।

– डॉ. राकेश शर्मा

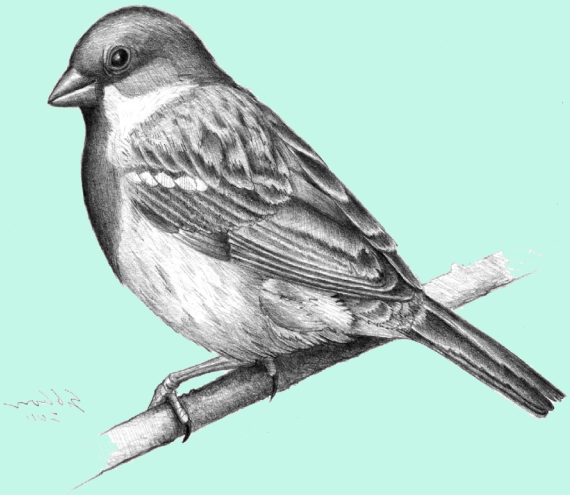

DEPARTMENT OF ENVIRONMENT

GOVT OF NCT OF DELHI

www.nfindia.org

NATURE FOUNDATION INDIA
www.nfindia.org
khatri@nfindia.org
naturefoundationindia@gmail.com

Program designed by: Rakesh Khatri

कंटेंट और पेज संयोजनः
वाटर कम्युनिटी इंडिया,
ट्रस्ट फॉर रिसर्च अर्थ एंड इन्वायरन्मेंट (ट्री)।